जीवन परिचय—दिनकर जी का जन्म 23 सितम्बर, 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरियाँ गाँव में एक सामान्य किसान 'रवि सिंह' तथा उनकी पत्नी 'मनरूप देवी' के पुत्र के रूप में हुआ था। दिनकर दो वर्ष के थे, जब उनके पिता का देहावसान हो गया। परिणामतः दिनकर और उनके भाई-बहनों का पालन-पोषण उनकी विधवा माता ने किया। दिनकर का बचपन और किशोरावस्था देहात में बीता, जहाँ दूर तक फैले खेतों की हरियाली, बाँसों के झुरमुट, आमों के बगीचे थे। प्रकृति की इस सुषमा का प्रभाव दिनकर के मन में बस गया, पर शायद इसीलिए वास्तविक जीवन की कठोरताओं का भी उन पर अधिक गहरा प्रभाव पड़ा। दिनकर जी की गणना आधुनिक युग के सर्वश्रेष्ठ कवियों में की जाती है। हिन्दी काव्य जगत में क्रान्ति और प्रेम के संयोजन के रूप में उनका योगदान अविस्मरणीय है विशेष रूप से राष्ट्रीय चेतना एवं जागृति उत्पन्न करने वाले कवियों में उनका विशिष्ट स्थान है। इनकी इन्हीं दो प्रवृत्तियों का समावेश इनकी 'उर्वशी' और 'कुरुक्षेत्र' नामक कृति में देखने को मिलता है।

छायावादी लोरियों से आत्म विमुग्ध हिन्दी के हृदय को 'दिनकर' जी ने अपनी ओजस्वी रचनाओं से झकझोरा। वे काव्य को जनजीवन के निकट लाए। कवि के सामाजिक दायित्व की अनदेखी न करके राष्ट्र की सामयिक सेवा में उन्होंने अपनी काव्यांजलि अर्पित की। सरकारी सेवा में रहते हुए भी आपने स्वदेश प्रेम से ओत-प्रोत रचनाएँ प्रस्तुत कीं। आपने स्वयं को जनसाधारण के नित्य जीवन से जोड़ा। 'रेणुका', 'हुंकार', 'परशुराम की प्रतीक्षा' उनकी ऐसी ही ओजस्विनी रचनाएँ हैं।

आपने केन्द्रीय सरकार की 'हिन्दी समिति' के परामर्शदाता के रूप में हिन्दी की यथार्थपरक सेवा की। आप 'नाटक-संगीत अकादमी' के सदस्य रहे तथा आकाशवाणी के निदेशक के रूप में भी कार्य किया। 'उर्वशी' महाकाव्य की रचना पर आपको 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्रदान किया गया। भारत सरकार ने भी आपको अपनी साहित्यिक सेवाओं के लिए 'पद्म-विभूषण' अलंकार प्रदान किया। 'रसवन्ती' तथा 'उर्वशी' आपके सरस शृंगारपरक काव्य के उदाहरण हैं तथापि आपकी प्रसिद्धि आपके राष्ट्रीय और उद्‌बोधक काव्य के कारण ही रही। इसीलिए राष्ट्र ने आपको राष्ट्र कवि की उपाधि प्रदान करके सम्मानित किया।

रचनाएँ—'दिनकर' की सर्वतोमुखी प्रतिभा ने हिन्दी के सभी रचना क्षेत्रों को आलोकित किया। आपने गद्य और पद्य दोनों के क्षेत्रों में अपने-अपने रचना-कौशल का प्रमाण प्रस्तुत किया। आपकी प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) **महाकाव्य**—दिनकर जी ने 'कुरुक्षेत्र' तथा 'उर्वशी' महाकाव्यों की रचना की। 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध की समस्या पर विचार किया गया है। अनेक सामाजिक समस्याएँ भी इस काव्य में उभारी और विवेचित की गई हैं। 'उर्वशी' का कथानक प्राचीन पौराणिक आख्यान पर आधारित है। इसमें विश्व नर और नारी के तात्विक स्वरूप का विवेचन किया गया है। मानव मन की अनेक मनोग्रन्थियों का काव्यमय विश्लेषण भी इस काव्य की विशेषता है।

(2) **खण्डकाव्य**—'रश्मिरथी' तथा 'प्रणभंग' खण्डकाव्य भी 'दिनकर' जी ने लिखे हैं। इनमें भी आपने अनेक सामाजिक समस्याओं को उठाया है।

(3) **अन्य रचनाएँ**—इनके अतिरिक्त 'रेणुका', 'हुंकार' 'सामधेनी' तथा 'परशुराम की प्रतीक्षा' आपकी ओजस्वी रचनाएँ हैं। 'रसवन्ती' आपके प्रेमपरक गीतों का संग्रह है।

काव्यगत विशेषताएँ—राष्ट्र कवि 'दिनकर' के काव्य में भाव-समृद्धि के साथ-साथ कला सौन्दर्य की अनुपम छवि भी विराजमान है। आपकी उभयपक्षीय काव्यगत विशेषताओं का विवरण अग्र प्रकार है—

Scanned with CamScanner

(क) भावपक्षीय विशेषताएँ

(1) **काव्य विषय**—कवि 'दिनकर' ने अपने काव्य की अधिकांश सामग्री भारत के गौरवमय अतीत से ली है किन्तु आपने उसे नव-संस्करण प्रदान करके देश-कालानुरूप स्वरूप प्रदान किया है। प्राचीन कथानकों और चरित्रों को आधुनिक परिवेश के अनुकूल बनाकर, आपने उन्हें प्रेरणाप्रद प्रतिमानों में ढाल दिया है। 'कुरुक्षेत्र', 'उर्वशी', 'रश्मिरथी' तथा 'प्रणभंग' ऐसी ही रचनाएँ हैं।

जनजीवन की समस्याएँ, राष्ट्रीय उद्बोधन, शोषण और अन्याय के विरुद्ध विद्रोह तथा शृंगार और प्रेम भी आपकी रचनाओं के विषय हैं। आपके काव्य में प्रकृति चित्रण स्वतंत्र रूप से कम किन्तु प्रसंगवश ही अधिक हुआ है।

(2) **रस योजना**—'दिनकर' जी वैसे तो रससिद्ध कवि थे किन्तु वीर रस ही आपके काव्य का प्रधान रस रहा है। 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'हुंकार' आदि वीर रस प्रधान रचनाएँ ही हैं। वीर रस का उदाहरण—'क्या धमकाता है काल! अरे! आजा मुट्ठी में बन्द करूँ, छुट्टी पाऊँ तुझको समाप्त कर दूँ निज को स्वच्छन्द करूँ'।

'रसवन्ती' तथा 'उर्वशी' में शृंगार रस की सुन्दर योजना हुई है, जैसे—

यही चाहती हूँ कि गन्ध का तन हो उसे धरूँ मैं, उड़ते हुए अदेह स्वप्न को बाँहों में जकड़ूँ मैं।

(3) **यथार्थ और क्रान्ति के स्वर**—कवि 'दिनकर' यथार्थवादी हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य को पलायनवादी प्रवृत्ति और छायावादी मदिरा से मुक्त करके क्रान्ति और व्यवस्था परिवर्तन के स्वर प्रदान किए हैं। वे कविता को जनजीवन से जोड़कर चले हैं। यथा—

'व्योम कुञ्जों की परी अयि कल्पने! आ उतर खेलें जरा मिल धूल में।'

इसी यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए कवि ने क्रान्ति के गीत गाये हैं। वे कहते हैं—

क्रान्ति धात्रि! कविते! जागो, उठ आडम्बर में आग लगा दो। पतन पाप पाखण्ड जले जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दो॥ उनका यही स्वर अधिकांश कविताओं में मुखरित हुआ है।

(4) **पुरातन को नवीन आलोक**—कवि 'दिनकर' को भारत के अतीत गौरव और भव्य संस्कृति से अनुराग है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में उसके प्रति ममता का भाव विराजमान है। 'पाटलिपुत्र की गंगा से' शीर्षक कविता में उनका यह ममतामय दृष्टिकोण इस रूप में सामने आया है।

'देवि! दुखद है वर्तमान की यह असीम पीड़ा सहना। कहीं सुखद इससे संस्मृति में है अतीत में रत रहना॥'

किन्तु इस पुरातन को ही वह नूतन बनाना चाहते हैं। तभी वह कहते हैं—

वर्तमान का आज नियंत्रण देहधरो आगे आओ। ग्रहण करो आकर देवता यह पूजा प्रसाद पाओ॥

(5) **राष्ट्रीय चेतना के स्वर**—'दिनकर' जी ने भारत की सोई-आत्मा, पौरुष और राष्ट्र चेतना को ललकार कर जगाया है। आपकी 'हिमालय' शीर्षक रचना का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना को झकझोरना ही है यथा—तू ध्यान मग्न ही रहा इधर वीरान हुआ प्यारा स्वदेश'।

(6) **विज्ञान-विमूढ़ता पर प्रहार**—द्वितीय महायुद्ध की भीषणता और मानव की अदम्य रणपिपासा की कटु आलोचना ने 'कुरुक्षेत्र' में स्वर पाया है। विज्ञानमूढ़ मानव को सत्पथ कराने के लिए कवि की वाणी बार-बार चेतावनी दे रही है—

'सावधान मनुष्य। यदि विज्ञान है तलवार, तो इसे दे फेंक, तजकर मोह स्मृति के पार।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार, काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार॥

(7) **मानवीय गुणों का आदर**—यही नहीं 'दिनकर' जी की वाणी, अशक्त, असहाय और शोषित वर्ग के प्रति भी सहानुभूति के स्वरों में गरजी है। जाति, वर्ग और गोत्र के नाम पर मानवीय गुणों का अपमान उन्हें सहन नहीं है—

जाति-जाति रटते जिनकी पूँजी केवल पाखंड। मैं क्या जानूँ जाति? जाति हैं ये मेरे भुजदण्ड।

(ख) कलापक्षीय विशेषताएँ

(1) **भाषा**—भाषा के विषय में 'दिनकर' जी ने उदारता से काम लिया है। विषयानुकूल और पाश्रानुकूल भाषा आपके काव्य की विशेषता है। यही कारण है कि आपकी भाषा के एकाधिक स्वरूप है।

Scanned with CamScanner

(i) **संस्कृतनिष्ठ भाषा**—भाषा का यह स्वरूप प्रमुखत: उनके प्रबन्ध काव्यों में रहा है। यद्यपि 'रश्मिरथी' इसका अपवाद माना जा सकता है। इस भाषा का एक उदाहरण दर्शनीय है—

"विषधर के फण पर अमृतवर्ति,
उद्धत, अदम्य, बर्बर, बल पर, रूपांकुश, क्षणि मृणाला तार।" (उर्वशी)

(ii) **सरल भाषा**—इस भाषा की शब्दावली तद्भव शब्द-प्रधान और व्यवहारिक है। यथा—

"सच है विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है।" (रश्मिरथी)

(iii) **मिश्रित भाषा**—'दिनकर' जी ने आवश्यकतानुसार विदेशी भाषा के शब्दों को भी मुक्त भाव से प्रयुक्त किया है। यथा—

"किस्मत के फेरे में पड़कर, प्रेम बसा दुश्मन के घर।" (रश्मिरथी)

भाषा को प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने के लिए कवि ने मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी यथास्थान प्रयोग किया है, जैसे—मन्त्र-मुग्ध होना, जय-जयकार होना, मुष्ठि में सिमटना आदि।

(2) **शैली**—'दिनकर जी की काव्य शैली प्रबन्ध और मुक्तक दोनों ही शिल्पों में सफलता से प्रस्तुत हुई है। उन्होंने उदात्त चरित्रों एवं युगानुकूल विषयों को भाव और विवेक के समन्वय के साथ समुपस्थित किया है। 'दिनकर' जी को नाटकीयता विशेष प्रिय है। आपके काव्य अपरम्परागत रीति से नाटकीय शैली में प्रारम्भ हुए हैं। यथा—

"वह कौन रोता है वहाँ इतिहास के अध्ययन में।" (कुरुक्षेत्र)

यथास्थान वर्णनात्मक, भावात्मक एवं संवादात्मक शैलियों का भी आपने सफलता से प्रयोग किया है।

(3) **अलंकार**—कवि 'दिनकर' अलंकारों के प्रेमी नहीं हैं। स्वत: स्वाभाविक रचना प्रवाह में जो अलंकार आ गए हैं, वही कवि को ग्राह्य हैं। उपमा, रूपक एवं मानवीकरण आपके प्रिय अलंकार हैं—

"यह शिला-सा वृक्ष, ये चट्टान-सी मेरी भुजाएँ" (उपमा)

↓

"विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत" (रूपक)

↓

"मेरे नरपति मेरे विशाल" (मानवीकरण)

(4) **छन्द**—'दिनकर' जी ने अनेक छन्दों को अपनी लेखनी की कसौटी बनाया है। इनमें परम्परागत नवीन एवं युक्त छन्दमयी रचनाएँ भी हैं। परन्तु रस एवं भाव के अनुसार छन्द चयन की विशेषता आपमें सर्वत्र विद्यमान है। कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी तथा अन्य रचनाओं में इनका छन्द कौशल दर्शनीय है।

साहित्य जगत में स्थान—एक ओजस्वी और क्रान्तिदर्शी काव्य के रचयिता के रूप में कवि 'दिनकर' सदैव स्मरणीय रहेंगे। आपने राष्ट्र को नई चेतना, नई दिशा और नया स्वर देने में सदा पहल की। भूषण की परम्परा का पुनर्जीवन एक बड़े अन्तराल के पश्चात् 'दिनकर' में प्रकट हुआ था, पर समय से पहले ही बुझ गया।

रामधारी सिंह दिनकर के प्रबन्ध काव्य 'कुरुक्षेत्र' के छठे सर्ग में कवि ने दुनिया भर में युद्ध और शान्ति के बारे में अपने विचार रखे हैं। इस सर्ग में कवि ने बताया है कि वैज्ञानिक उन्नति के साथ-साथ मनुष्य की बुद्धि बढ़ती रही, लेकिन उसका हृदय पिछड़ गया। कवि का मानना है कि वैज्ञानिक उपलब्धियों की वजह से मनुष्य के बौद्धिक विकास ने उसके हृदय की कोमल भावनाओं को दवा दिया है। इस सर्ग में कवि ने ये भी बताया है कि मनुष्य के मन में देवत्व की भावना उत्पीड़ित होकर हाहाकार करने लगती है।

Scanned with CamScanner